

## The Hindu Article

18 March 2019

## Nehru, China and the Security Council Seat

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में स्थायी सदस्यता के लिए चीन का समर्थन किया गया था।

1950 में यू.एस.ए ने भारतीय राजदूत के माध्यम से भारत को यह संकेत दिया कि USA द्वारा चीन को हटाने और भारत को सुरक्षा परिषद् की स्थायी सदस्यता दिए जाने का पक्ष लिया गया था।

• वास्तव में यह कोई औपचारिक घोषणा नहीं थी तथा नेहरू ने सुरक्षा परिषद् की सदस्यता को चीन को प्रतिस्थापित करने की कीमत पर स्वीकार नहीं किया।

**1950 का एशियाई परिदृश्य**

• इस समय शीत युद्ध अपने प्रारंभिक दौर में था, जिसमें 2 महाशक्तियां अमेरिका व सोवियत संघ (USSR) के बीच टकराव था। उस समय चीन USSR का सहयोगी राष्ट्र था।

• नेहरू द्वारा ऐसी नीति बनाने का प्रयास किया गया था, जिससे भारत की सुरक्षा रणनीतिक स्वायत्तता और औद्योगिकीकरण को सुनिश्चित किया जा सके।

• अमेरिका के भारत को संयुक्त राष्ट्र में स्थायी सदस्यता देने और चीन को बाहर करने के संकेत को नेहरू द्वारा समर्थन नहीं किया गया क्योंकि वे जानते थे कि इससे एशिया में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होगी और विश्व शांति प्रभावित होगी।

• भारत द्वारा शीत युद्ध से स्वयं को दूर रखने एवं निरपेक्ष रहने तथा महाशक्तियों के इस खेल से बचने के लिए स्थायी सदस्यता के संकेत को स्वीकार नहीं किया गया था।

• नेहरू द्वारा चीन को स्थायी सदस्यता दिए जाने का समर्थन किया गया क्योंकि उन्होंने समझा कि चीन जैसी महान शक्ति को समायोजित किए बिना और अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में इसे उचित स्थान प्रदान किए बिना एशिया में शांति स्थापित नहीं की जा सकती।

• इसके अलावा चीन, भारत का पड़ोसी देश है और चीन के साथ मजबूत संबंध बनाने के लिए यह आवश्यक था कि भारत द्वारा अमेरिका के इस आग्रह को स्वीकार न किया जाए।

**महत्वपूर्ण संदर्भ**

• सुरक्षा परिषद् में भारत की स्थायी सदस्यता के संकेत अमेरिका द्वारा भारत को चीन सोवियत संघ के खिलाफ पश्चिम के साथ गठबंधन को लुभाने को दिए गए थे।

• जब तत्कालीन भारतीय राजदूत विजया लक्ष्मी पंडित और भारत के प्रधानमंत्री पं० नेहरू को अमेरिका द्वारा यह जानकारी दी गई तो जवाब में नेहरू द्वारा कहा गया कि भारत निश्चित रूप से सुरक्षा परिषद् की स्थायी सदस्यता का हकदार है, लेकिन चीन को प्रतिस्थापित करने की कीमत पर नहीं।

• सितम्बर 1955 में नेहरू द्वारा स्पष्ट किया गया कि स्थायी सदस्यता हेतु भारत को कोई औपचारिक पेशकश नहीं हुई है। सुरक्षा परिषद् की संरचना निर्धारित है और जिन राष्ट्रों के पास स्थायी सदस्यता उपलब्ध है, उन राष्ट्रों में संयुक्त राष्ट्र चार्टर में संशोधन किए बिना कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता है।

• नेहरू द्वारा यह स्पष्ट रूप से समझ लिया गया था कि अमेरिका द्वारा भारत को अपने हितों के लिए उपयोग करने हेतु स्थायी सदस्यता की पेशकश की गई। यदि भारत यह पेशकश स्वीकार कर लेता तो चीन के साथ शत्रुता हो जाती है, इसके अलावा सोवियत संघ जो चीन का करीबी व सहयोगी राष्ट्र था वह इस कदम को वीटो कर देता क्योंकि इससे संयुक्त राष्ट्र के चार्टर संशोधन की आवश्यकता होगी जो स्थायी सदस्यों के वीटो पावर के अधीन है।

• भारत द्वारा इस पेशकश को स्वीकार कर लेने से सोवियत संघ व भारत के संबंधों में भी खटास पैदा हो जाती।

• नेहरू द्वारा यह निर्णय तत्कालिक परिस्थितियों, रणनीतिक व राजनीतिक संदर्भ में लिया गया था।

भारत और संयुक्त राष्ट्र

- 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने एक प्रस्ताव पारित कर सुरक्षा परिषद में सुधार हेतु A/69/L-92 मसौदे को स्वीकृत किया था।
- सुरक्षा परिषद के विस्तार और सुधार की मांग भारत पिछले बहुत अरसे से करता आ रहा है। वर्तमान में सुरक्षा परिषद की संरचना द्वितीय विश्व युद्ध के बाद राष्ट्रों की भौगोलिक व सैन्य शक्ति के आधार पर है।
- अमेरिका तथा फ्रांस ने भारत को स्थायी सदस्यता दिए जाने का समर्थन किया है। G-4 गुट जिसमें ब्राजील जर्मनी, भारत और जापान शामिल हैं। यह गुट सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता का दावा करता है।
- **भारत को स्थायी सहस्यता हेतु निम्न सुधार करने होंगे-** भारत की सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता की दावेदारी के लिए भारत द्वारा संयुक्त राष्ट्र के शांति बहाल हेतु अपनी सेनाये भेजना, यह देश की जनसंख्या, जीडीपी, क्षेत्रफल, आर्थिक क्षमता, संभावनाएँ, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत पर आधारित है।

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।

1. भारत, संयुक्त राष्ट्र में रंगभेद के विरुद्ध आवाज उठाने वाला पहला देश था।
2. संयुक्त राष्ट्रसंघ में भारत राजनीतिक स्वतंत्रता समिति का पहला अध्यक्ष निर्वाचित हुआ था।
3. भारत औपनिवेशिक देशों को आजादी दिये जाने के संबंध में संयुक्त राष्ट्र की ऐतिहासिक घोषणा 1960 का सह प्रायोजक था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन असत्य है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) 1 और 2
- (c) 2 और 3
- (d) उपर्युक्त सभी

प्रारंभिक परीक्षा का उत्तर - (D)

#### मुख्य परीक्षा प्रश्न-

**प्रश्न-** वर्तमान संदर्भ में संयुक्त राष्ट्र की प्रासंगिकता कम होती जा रही है क्योंकि बदलते हुए परिवेश में सुरक्षा परिषद में बदलाव, आतंकवाद की परिभाषा तय करने या अंतर्राष्ट्रीय विवादों के समाधान में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका पर प्रश्नचिन्ह खड़ा हो रहा है। उपर्युक्त कथन के संदर्भ में भारत द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ के सांगठनिक संरचना में बदलाव के लिए किये जा रहे प्रयासों की समीक्षा कीजिए।